लेकिन सजीव प्रसारण के दौरान कभी किसी श्रोता को एहसास नहीं हुआ होगा इस निजी अवसाद का। ऐसे लम्हों में प्रसारण के दौरान कभी जरा भी चूक हो जाए तो अपराध बोध से कई दिनों तक नींद गायब रहती है।

विविध भारती से जुड़ी एक बेहद रेशमी स्मृति है। आई आई टी के एक अनाम प्रोफेसर हैं, जो तकरीबन 16 बरस से पत्र लिख रहे हैं मुझे। मेरे छायागीत की तिलिस्मी तारीफ करते हैं। उनके एक-एक अल्फाज में प्रशंसा की नदी बहती है लेकिन आज तक ना उन्होंने कभी अपना नाम बताया, ई-मेल भी नहीं। और फोन नंबर भी नहीं। ना ही कभी किसी तरह का संदेश भेजा। सिर्फ चिट्ठियां भेजते हैं। वो भी ऑफिस के पते पर। उनकी चिट्ठी लिखने का अंदाज बड़ा ही दिलचस्प और मानीखेज होता है। जब कभी उनसे बात होगी मुलाकात होगी तो मैं जरूर उनका परिचय जानना चाहूंगी।

श्रोताओं के जिक्र पर यह बात बताना जरूरी है। श्रोता विविध भारती से अपना गहरा नाता जोड़ लेते हैं। जिसमें उनकी अपनी एक दुनिया होती है। बड़ी खुशी मिलती है जब हमें अपने घर की बेटी, बहू, बहन या दीदी की पदवी से वह पत्र लिखते हैं। ऐसा ही एक वाकया मैं साझा करना चाहूंगी। मेरे बेटे जादू का जन्म हुआ था और मैं लंबी छुट्टी के बाद जब दफ्तर लौटी तो संदेश मिला कि कवि प्रदीप की पत्नी भद्रा प्रदीप का कई बार तुम्हारे लिए फोन आया था। उनसे बात कर लेना वह सखी सहेली बड़े ध्यान से सुनती हैं और तुम्हारी बहुत बड़ी मुरीद हैं। मेरा उनसे कभी कोई संवाद या परिचय नहीं था।

कई बार नियति बड़ा अजीब बर्ताव करती है। मैंने आदरणीय भद्रा प्रदीप जी से बात करने के लिए उन्हें फोन किया तो पता चला वह इस फानी दुनिया से विदा ले चुकी हैं। आखिरी पलों में भी सखी सहेली कार्यक्रम और हम सब सखियों का जिक्र कर रही थीं। क्या कहूं....मुझे काटो तो खून नहीं। मैं फोन का रिसीवर हाथ में लिए बर्फ बन गई। आज तक इस बात का पछतावा है कि उनसे मेरी बात नहीं हो पाई। जो मुझे इतना ज्यादा स्नेह करती थीं। जिन्होंने मुझे देखा नहीं सिर्फ मेरी आवाज से उन्होंने मुझसे ऐसा गहरा नाता जोड़ लिया था।

विविध भारती के सखी सहेली कार्यक्रम के श्रोताओं ने स्नेह के जिस अनमोल सागर की लहरों से भिगोया है, मैं सदा शुक्रगुजार रहूंगी। इसी तरह की एक और घटना यहां जोड़ना चाहूंगी। पटना के एक श्रोता ने अपने साजो-सामान के साथ विविध भारती के गेट पर आकर डेरा जमा लिया। सुरक्षा की दृष्टि से आम जनता को विविध भारती के परिसर में आने की मनाही होती है, सो सिक्युरिटी गार्ड ने मुझे बताया वह सज्जन हमसे मिलना चाहते हैं। मैंने उन्हें सादर बुलाया। सत्कार के साथ उनसे मेरी संक्षिप्त मुलाकात हुई। और वह गेट के बाहर चले गए। शाम हो गई....रात हो गई....और फिर सुबह....अगली दोपहर....और फिर शाम भी वहां से गए ही नहीं। गेट के पास के बस स्टॉप पर रेडियो कान में लगाए कई दिनों तक वे महानुभाव विराजमान रहे। इस बीच उनकी बस एक ही रट थी कि ममता जी से मेरी शादी पक्की हो चुकी है। मैं तो उन्हें यहां से ले जाने आया हूं। मैं उन्हें बेइंतिहा प्यार करता हूं। सुरक्षाकर्मियों ने उन्हें समझाया ममता जी शादीशुदा हैं। आप यह बहकी-बहकी बातें ना करें। यहां से जाएं। पर वह सुधि श्रोता कहां मानने वाले। शुरू में तो इस बात पर मुझे बड़ी हंसी आती थी लेकिन जब वह महाशय महीनों वहीं अटल रहे, अडिग रहे, बीच में एकाध दिन के लिए वे ग़ायब होते और फिर प्रकट हो जाते। फिर से वही रट कि मैं तो ममता जी से शादी करुंगा तो फिर यह असुविधा मेरे लिए मुसीबत बन गई थी। बड़ी मुश्किल से उनसे छुटकारा मिला था।

विविध भारती के संग्रहालय में अनमोल रिकॉर्डिंग्स का खजाना है। मेरे मन में जिए हुए पलों की असंख्य स्मृतियों का खजाना है। एक परिवार की तरह है विविध भारती जहां कुछ कार्यक्रम अधिशासी, उद्घोषक, एडमिन स्टाफ और केंद्र निदेशक ....सब एक दूसरे से परिवार की तरह अपने सुख-दुख साझा करते हैं। हंसी ठिठोली के साथ तल्खियां भी होती हैं... लेकिन उन्हें नजरअंदाज़ कर दिया जाता है।

विविध भारती जॉइन करने के शुरुआती दौर में एक बेहद लोकप्रिय कार्यक्रम प्रसारित होता था–'आपके अनुरोध पर'...जिसे मैं और यूनुस खान साथ प्रस्तुत करते थे। टेलीफोन पर देश भर के श्रोता इस कार्यक्रम में अपने मन की बातें साझा करते थे और साथ में अपनी पसंद के गाने की फरमाइश करते थे। पहले इस कार्यक्रम की रिकॉर्डिंग होती थी, बाद में एडिटिंग और मिक्सिंग। मैं और यूनुस जी मिलकर इसकी रिकॉर्डिंग-एडिटिंग-मिक्सिंग किया करते थे। इसके प्रोड्यूसर महेश केलुस्कर थे। इस कार्यक्रम की रिकॉर्डिंग के बाद हम एक दूसरे से अपने मन की बातें और जज्बात साझा करते। कई बरस बाद वह कार्यक्रम तो बंद हो गया लेकिन मेरे और यूनुस जी के मन के दरवाजे बंद नहीं हुए। हमने जीवन भर के लिए एक दूसरे का हाथ थाम लिया। इस तरह विविध भारती ने हमें बहुत कुछ दिया है। यहां तक कि अपना जीवनसाथी भी।

जब-जब सजती है छायागीत की महफिल। जब अपने कहानीकार पक्ष को कार्यक्रमों में उड़ेलती हूं.... जब मेरे भीतर की भावनाओं का पाखी आसमान में कुलांचें भरता है तो इन कार्यक्रमों से और ज्यादा मोहब्बत कर बैठती हूं। कार्यक्रम चाहे एसएमएस के बहाने वी.बी.एस के तराने हो, मनचाहे गीत हो, सखी सहेली हो, आज के फनकार हो, त्रिवेणी या फिर मेरा प्रिय कार्यक्रम छायागीत.....जब भी पेश करती हूं तो मैं दूसरी ही दुनिया में विचरती हूं। विविध भारती हमारे लिए एक प्रोफेशन ही नहीं बल्कि घर के एक सदस्य की तरह है जो हमारे ग़मज़दा पलों में फाहा बन जाती है, खुशी के पलों में मिश्री की डली बन जाती है। ■